शोध-चिंतन पत्रिका: विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित ई शोध पत्रिका

अंक:9; जुलाई-दिसंबर, 2024; पृष्ठ संख्या : 63-80

हिंदी एवं नेपाली कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन

(2001-2020 तक की चयनित कहानियों में संवेदना के संदर्भ में)

मोहन महतो

शोध सार :

आज भारतवर्ष में पाश्चात्य सभ्यता, बाजारवाद, स्वार्थपरता एवं भोगवादिता की प्रवृत्ति प्रबल होती जा रही है, जिससे व्यक्तिवाद बढ़ा, संयुक्त परिवार टूटे, आदर भाव कम हुआ। मानव मूल्य, नैतिक मूल्य एवं जीवन मूल्य पर्याप्त गति से संक्रमित तथा परिवर्तित हुए हैं। तुलनात्मक अध्ययन द्वारा अनेक समानतापरक तथ्यों एवं सत्यों की स्थापना करके भारतीय संस्कृति की मूलभूत एकता की भावना को फिर चरितार्थ किया जा सकता है। स्पष्ट है कि विभिन्न प्रांतों एवं देशों के साहित्य में विविध रूपों में व्यक्त मानव-चेतना की अखंडता, विराटता एवं जिजीविषा को तुलनात्मक अध्ययन द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है। तुलनात्मक साहित्य मात्र साम्य-वैषम्य प्रकट करने वाली तुलना भर नहीं है, यह साहित्य-विशेष को पृष्ठभूमि प्रदान करने वाली, सामूहिक प्रवृत्तियों के संधान द्वारा मानवीय कार्यकलाप के अन्य क्षेत्रों के पारस्परिक संबंध से अवगत भी कराती है। वस्तुतः सर्वोत्कृष्ट साहित्य अर्थात् गौरव ग्रंथों में देशकाल से परे तुलनात्मक अध्ययन द्वारा कुछ ऐसी विशेषताएं व संबंध-सूत्र प्रकट होते हैं जिस पर हमारा ध्यान ही नहीं जाता। इन गौरव-ग्रंथों पर पड़ने वाले देशज प्रभाव, उपलब्धियों का पाठालोचन, उस कृति का उत्स, प्रभाव-प्रक्रिया, व्यक्तिगत दृष्टिकोण आदि का अध्ययन वैज्ञानिक प्रक्रिया द्वारा किया जाता है।

साहित्य के अनुशीलन में तुलनात्मक दृष्टि महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। भूमंडलीकरण के युग में तुलनात्मक अध्ययन का महत्व मानवतावाद एवं विश्व मानवतावाद की बंधुत्व-भावना के साथ और भी बढ़ गया है। विश्व साहित्य की एकता का निरूपण और उसके द्वारा विश्व मानव की एकता का उद्घाटन करने के लिए तुलनात्मक अध्ययन महत्वपूर्ण है।

तुलनात्मक अध्ययन मानव के सीमित ज्ञान क्षेत्र का विस्तार करता है और उसके ज्ञान अर्जन में भाषा, साहित्य एवं देश आदि को बाधा नहीं डालने देता। तुलनात्मक अध्ययन उच्चतर ज्ञान वृद्धि में सहायक होता है। समूचे विश्व में जाति, वर्ण, धर्म आदि वैषम्य होते हुए भी मनुष्य- मनुष्य में प्रायः समानता पाई जाती हैं। वातावरण, रीति- रिवाज संस्कृति एवं सभ्यता आदि विषयों में भिन्नता होते हुए भी मानव मन एक ही सांचे में ढला है। तुलनात्मक अध्ययन से मनुष्य संकुचित मनोवृत्ति से मुक्त होकर व्यापक दृष्टिकोण अपनाते हैं वह औरों का महत्व स्वीकार कर उनसे रागात्मक संबंध स्थापित करता है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान भी तुलनात्मक अध्ययन से संभव है। विश्व के अनेक राष्ट्रों के बीच सांस्कृतिक संबंध इसी आधार पर स्थापित हो रहे हैं। विश्व संस्कृति को एक मंच पर लाना तुलनात्मक अध्ययन द्वारा ही संभव है। आज बाजारवाद एवं अंधी आधुनिकता में सबसे अधिक किसी मूल्य का पतन हुआ है तो वह मानवीय संवेदना है। इस शोध आलेख का एक उद्देश्य आज के संदर्भ में दो भाषाओं के बीच इस मानवीय संवेदना की तलाश है।

बीज शब्द : बाजारवाद, स्वार्थपरता, संकुचित मनोवृत्ति, साम्य-वैषम्य, रागात्मक संबंध, अनुभवजन्य ज्ञान, मनोवृत्तियाँ, बुद्धिवाद, सहभागिता